# लेखक परिचय: गुरदयाल सिंह

## (गुरदयाल सिंह (1933–2016): पंजाबी साहित्य के प्रतिष्ठित लेखक)

### लेखक परिचय: गुरदयाल सिंह

गुरदयाल सिंह का नाम पंजाबी साहित्य के उन शीर्ष लेखकों में लिया जाता है जिन्होंने न केवल साहित्य को नई दिशा दी, बल्कि समाज के उपेक्षित और दलित वर्गों की आवाज़ को भी प्रमुखता से प्रस्तुत किया। उनका जन्म 10 जनवरी 1933 को पंजाब के जैतो कस्बे में एक साधारण दस्तकार परिवार में हुआ था। उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा कठिन परिस्थितियों में पूरी की और जीवन के संघर्षों से जूझते हुए साहित्य के क्षेत्र में अपनी एक अलग पहचान बनाई।

गुरदयाल सिंह ने बचपन में कीलों और हथौड़ों से काम लिया, क्योंकि उनका परिवार आर्थिक दृष्टि से संपन्न नहीं था। इसके बावजूद उन्होंने शिक्षा प्राप्त की और अंततः लेखन को अपनी पहचान बनाया। 1954 से 1970 तक वे स्कूल में अध्यापक के रूप में कार्यरत रहे। इस दौरान उन्होंने समाज के जमीनी यथार्थ को नजदीक से देखा और उसे अपने लेखन का हिस्सा बनाया। उनकी पहली कहानी 1957 में 'पंच दरिया' नामक पत्रिका में प्रकाशित हुई। इसके बाद उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

### गुरदयाल सिंह की साहित्यिक यात्रा: एक समाजसेवी लेखक का सफर

गुरदयाल सिंह की साहित्यिक यात्रा एक साधारण दस्तकार परिवार से शुरू होकर ज्ञानपीठ पुरस्कार तक पहुँची। उन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से पंजाब के गाँवों की मिट्टी की सुगंध, वहाँ के मजदूरों के संघर्ष और दलित समाज की पीड़ा को शब्दों में पिरोया। उनका साहित्य न केवल मनोरंजन करता है, बल्कि सामाजिक चेतना भी जगाता है।

प्रारंभिक लेखन एवं विषय-वस्तु:

1957 में 'पंच दरिया' पत्रिका में प्रकाशित उनकी पहली कहानी से ही उनकी रचनात्मक प्रतिभा का परिचय मिला। उन्होंने अपने लेखन में ग्रामीण जीवन, खेतिहर मजदूरों का संघर्ष, दलितों के प्रति सामाजिक अन्याय और पिछड़े वर्ग की मानसिकता को गहराई से चित्रित किया। उनके पात्र अक्सर समाज के उपेक्षित वर्ग से आते हैं, जो सदियों से शोषण झेलते आए हैं।

प्रमुख रचनाएँ एवं साहित्यिक शैली:

गुरदयाल सिंह ने **9** उपन्यास**, 10** कहानी संग्रह**, 1** नाटक**, 1** एकांकी संग्रह**, 10** बाल साहित्य की पुस्तकें और **2** विविध गद्य रचनाएँ लिखीं। उनकी प्रसिद्ध कृतियों में 'मढ़ी का दीवा', 'अथ-चाँदनी रात', 'पाँचवाँ पहर', 'सब देश पराया' और 'साँझ-सबेरे' शामिल हैं। उनकी आत्मकथा 'क्या जानूँ मैं कौन**?**' में उनके जीवन संघर्ष और साहित्यिक सोच का विस्तृत विवरण मिलता है।

उनकी भाषा सरल, मर्मस्पर्शी और प्रभावशाली है। वे यथार्थवादी शैली में लिखते थे, परंतु उनकी रचनाओं में करुणा और मानवीय संवेदना स्पष्ट झलकती है।

## गुरदयाल सिंह की प्रमुख कृतियाँ

गुरदयाल सिंह ने अपने साहित्यिक जीवन में कई उपन्यास, कहानी संग्रह, नाटक और आत्मकथा लिखीं, जिनमें से अधिकांश ने पंजाबी साहित्य को नई दिशा दी। उनकी रचनाओं में ग्रामीण जीवन, दलित समाज का संघर्ष, सामाजिक विषमता और मानवीय संवेदनाएँ प्रमुखता से उभरकर आती हैं।

**1.** मढ़ी का दीवा (उपन्यास):

- यह गुरदयाल सिंह का सबसे प्रसिद्ध उपन्यास है, जिसके लिए उन्हें **1999** में ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
- इसमें एक दलित परिवार की पीड़ा, शोषण और उसके आत्मसम्मान की लड़ाई को मार्मिक ढंग से चित्रित किया गया है।
- उपन्यास का केंद्रीय पात्र 'जीवा' है, जो सामाजिक अत्याचारों के बावजूद अपनी मानवीय गरिमा बनाए रखता है।

**2.** अथ-चाँदनी रात (उपन्यास):

- इस उपन्यास में ग्रामीण पंजाब के जीवन की विसंगतियों और सामाजिक बदलाव को दर्शाया गया है।
- कथानक में पारंपरिक मूल्यों और आधुनिकता के बीच टकराव को उकेरा गया है।

**3.** पाँचवाँ पहर (उपन्यास):

- यह उपन्यास मध्यवर्गीय समाज के संघर्षों और आकांक्षाओं पर केंद्रित है।
- इसमें पात्रों के मनोवैज्ञानिक द्वंद्व को गहराई से प्रस्तुत किया गया है।

**4.** सब देश पराया (उपन्यास):

- इस रचना में प्रवासी पंजाबियों के जीवन की चुनौतियों और उनकी पहचान की तलाश को दर्शाया गया है।
- यह उपन्यास विस्थापन और सांस्कृतिक संकट की मार्मिक अभिव्यक्ति है।

**5.** साँझ-सबेरे (कहानी संग्रह):

- इस संग्रह की कहानियाँ ग्रामीण जीवन के यथार्थ और मानवीय संबंधों की गहन छवियाँ प्रस्तुत करती हैं।



Free Pdf Download on www.ncertsolutionhub.in

- इनमें सामाजिक अन्याय और साधारण लोगों की जिजीविषा को उजागर किया गया है।

**6.** क्या जानूँ मैं कौन? **(**आत्मकथा**)**:

- यह गुरदयाल सिंह की आत्मकथा है, जिसमें उनके बचपन, संघर्ष और साहित्यिक यात्रा का विवरण मिलता है।
- इसमें उन्होंने अपने व्यक्तिगत अनुभवों के साथ-साथ पंजाबी समाज की बदलती परिस्थितियों को भी रेखांकित किया है।

## गुरदयाल सिंह का साहित्यिक योगदान और विशेषताएँ

गुरदयाल सिंह पंजाबी साहित्य के ऐसे स्तंभ थे, जिन्होंने अपनी लेखनी से समाज के उपेक्षित वर्गों को आवाज़ दी। उनका साहित्यिक योगदान बहुआयामी रहा—वे न केवल एक प्रतिबद्ध उपन्यासकार थे, बल्कि कहानीकार, नाटककार और बाल साहित्यकार के रूप में भी उन्होंने महत्वपूर्ण रचनाएँ दीं। उनकी रचनाओं की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

**1.** यथार्थवादी दृष्टिकोण:

गुरदयाल सिंह ने अपने लेखन में समाज के उन तबकों को स्थान दिया, जिन्हें अक्सर मुख्यधारा के साहित्य में अनदेखा किया जाता था। उनके पात्र खेतिहर मज़दूर, दलित और पिछड़े वर्ग के लोग होते थे, जो सामाजिक असमानता और शोषण का शिकार थे। उन्होंने इनकी पीड़ा, संघर्ष और आकांक्षाओं को बिना किसी अतिशयोक्ति के प्रस्तुत किया।

**2.** दलित चेतना का प्रबल स्वर:

गुरदयाल सिंह पंजाबी साहित्य के पहले ऐसे रचनाकार थे, जिन्होंने दलित समुदाय के जीवन को केंद्र में रखकर लिखा। उनकी रचनाएँ दलितों की सामाजिक-आर्थिक विषमताओं, उनकी अस्मिता और संघर्ष को उजागर करती हैं। उन्होंने न केवल शोषण को दर्शाया, बल्कि दलितों में जागरूकता और आत्मसम्मान की भावना भी जगाई।

**3.** ग्रामीण जीवन का सजीव चित्रण:

उनका लेखन पंजाब के गाँवों की सच्ची तस्वीर प्रस्तुत करता है। उन्होंने ग्रामीण संस्कृति, रीति-रिवाज़ों, लोक-विश्वासों और सामूहिक जीवन के संघर्षों को बड़ी ही बारीकी से उकेरा। उनके उपन्यासों और कहानियों में खेतों की मेहनत, सामंती व्यवस्था का दमन और साधारण लोगों की आशाएँ स्पष्ट झलकती हैं।

**4.** भाषा और शैली की मौलिकता:

गुरदयाल सिंह की भाषा सरल, सहज और प्रभावी थी। उन्होंने पंजाबी के स्थानीय शब्दों, मुहावरों और लोकगीतों का सुंदर प्रयोग किया, जिससे उनकी रचनाएँ जीवंत हो उठीं। उनकी शैली में व्यंग्य और मार्मिकता का अनूठा संगम था, जो पाठकों को भावनात्मक रूप से जोड़ता था।

**5.** बहुआयामी साहित्यिक विरासत:

उन्होंने उपन्यास, कहानी, नाटक और बाल साहित्य सहित विविध विधाओं में लेखन किया। उनकी प्रसिद्ध कृतियाँ जैसे 'मढ़ी का दीवा', 'अथ-चाँदनी रात' और 'पाँचवाँ पहर' ने न केवल पंजाबी साहित्य, बल्कि भारतीय साहित्य को भी समृद्ध किया।

## सम्मान और पुरस्कार

गुरदयाल सिंह को पंजाबी साहित्य में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए कई प्रतिष्ठित सम्मानों और पुरस्कारों से नवाजा गया। उनकी रचनाएँ न केवल साहित्यिक दृष्टि से समृद्ध थीं, बल्कि सामाजिक सरोकारों और ग्रामीण जीवन की सच्चाइयों को भी बखूबी उजागर करती थीं। यही कारण है कि उन्हें राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर व्यापक मान्यता मिली।

प्रमुख पुरस्कार:

1. ज्ञानपीठ पुरस्कार **(1999):-**
   गुरदयाल सिंह को साल 1999 में भारतीय साहित्य के सर्वोच्च सम्मान ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार उनके प्रसिद्ध उपन्यास "मढ़ी का दीवा" के लिए दिया गया, जिसमें उन्होंने पंजाब के ग्रामीण जीवन की मार्मिक झलक पेश की है। यह उपन्यास न केवल पंजाबी साहित्य, बल्कि हिंदी सहित अन्य भाषाओं में भी खूब सराहा गया।

2. साहित्य अकादमी पुरस्कार:-
   साहित्य अकादमी, भारत की प्रतिष्ठित साहित्यिक संस्था ने भी गुरदयाल सिंह के साहित्यिक योगदान को स्वीकार करते हुए उन्हें यह पुरस्कार प्रदान किया। यह सम्मान उनकी साहित्यिक गहराई और समाज के पिछड़े वर्गों के प्रति संवेदनशीलता को दर्शाता है।

3. सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार:-
   इस पुरस्कार के माध्यम से गुरदयाल सिंह को भारत और तत्कालीन सोवियत संघ के बीच सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत करने वाले लेखक के रूप में सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार उनकी अंतरराष्ट्रीय ख्याति का प्रमाण था।

4. पंजाब साहित्य अकादमी पुरस्कार:-
   पंजाब सरकार की ओर से दिया जाने वाला यह सम्मान उन्हें पंजाबी भाषा और साहित्य के विकास में उनके अमूल्य योगदान के लिए प्रदान किया गया।

अन्य सम्मान और अंतरराष्ट्रीय मान्यता:

गुरदयाल सिंह को उनके लेखन के लिए विभिन्न विश्वविद्यालयों और साहित्यिक संस्थानों द्वारा भी सम्मानित किया गया। उन्हें कई अंतरराष्ट्रीय सेमिनारों और साहित्यिक सम्मेलनों में आमंत्रित किया गया, जहाँ उन्होंने भारतीय साहित्य और ग्रामीण संस्कृति को वैश्विक स्तर पर प्रस्तुत किया।



Free Pdf Download on www.ncertsolutionhub.in

## आखिरी पड़ाव: गुरदयाल सिंह की साहित्यिक और सामाजिक विरासत

गुरदयाल सिंह का जीवन केवल साहित्य तक सीमित नहीं था—वे एक शिक्षक, चिंतक और समाज के प्रति संवेदनशील रचनाकार थे। उन्होंने अपने लेखन के माध्यम से पंजाब के गाँवों की मिट्टी की सुगंध, वहाँ के मजदूरों के संघर्ष और दलित समाज की पीड़ा को शब्दों में पिरोया। लेकिन उनका योगदान केवल किताबों तक ही नहीं, बल्कि कक्षाओं तक भी फैला हुआ था।

शिक्षा के क्षेत्र में योगदान:

गुरदयाल सिंह ने 1954 से 1970 तक एक स्कूल शिक्षक के रूप में कार्य किया। इसके बाद वे कॉलेज में प्राध्यापक बने और अंततः विश्वविद्यालय स्तर पर प्रोफेसर के पद से सेवानिवृत्त हुए। शिक्षण के दौरान उन्होंने न केवल पाठ्यक्रम पढ़ाया, बल्कि विद्यार्थियों को समाज के यथार्थ से जोड़ने का प्रयास किया। वे चाहते थे कि शिक्षा केवल डिग्री हासिल करने का साधन न बने, बल्कि युवाओं में सामाजिक न्याय और मानवीय मूल्यों की समझ विकसित करे।

साहित्य में अमर योगदान:

गुरदयाल सिंह ने अपनी रचनाओं में ग्रामीण जीवन की सच्चाइयों को बिना लाग-लपेट के प्रस्तुत किया। उनका उपन्यास 'मढ़ी का दीवा' पंजाबी साहित्य की एक कालजयी कृति मानी जाती है, जिसमें उन्होंने एक गरीब दलित परिवार के संघर्ष को मार्मिक ढंग से चित्रित किया। उनकी अन्य प्रमुख रचनाएँ जैसे 'अथ-चाँदनी रात', 'पाँचवाँ पहर' और 'सब देश पराया' भी समाज के उपेक्षित वर्गों की आवाज़ बनीं।

सम्मान और विरासत:

उनके साहित्यिक योगदान के लिए उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार, साहित्य अकादमी पुरस्कार और सोवियत लैंड नेहरू सम्मान जैसे प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। उनकी रचनाएँ न केवल पंजाबी, बल्कि हिंदी और अन्य भाषाओं में भी अनूदित होकर पाठकों तक पहुँचीं।

अंतिम समय और अमर प्रभाव:

16 अगस्त 2016 को गुरदयाल सिंह ने इस दुनिया को अलविदा कह दिया, लेकिन उनकी रचनाएँ आज भी जीवित हैं। उनका लेखन केवल साहित्य नहीं, बल्कि सामाजिक बदलाव का एक दस्तावेज़ है। वे मानते थे कि साहित्य का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि समाज को जगाना है। आज भी उनकी कहानियाँ और उपन्यास पाठकों को सोचने पर मजबूर करते हैं और यही उनकी सच्ची विरासत है।

## निष्कर्ष

गुरदयाल सिंह केवल एक साहित्यकार नहीं थे, वे समाज के संवेदनशील चिंतक, यथार्थ के सजग द्रष्टा और उपेक्षित वर्गों की आवाज़ थे। उन्होंने साहित्य को एक उद्देश्यपूर्ण दिशा दी और अपने लेखन के माध्यम से यह सिद्ध किया कि साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि समाज को बदलने का एक सशक्त माध्यम भी



Free Pdf Download on www.ncertsolutionhub.in

हो सकता है। उनकी रचनाएं आने वाली पीढ़ियों को समाज के यथार्थ से रूबरू कराती रहेंगी और उन्हें बेहतर इंसान बनने की प्रेरणा देती रहेंगी।